भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

1 मई, 2022

अंतर्राष्ट्रीय तौर पर बढ़ती क्रांतिकारी परिस्थितियों में विनाशकारी साम्राज्यवाद को ध्वस्त करने के जरिए समाजवाद जहां युद्धों के लिए कोई जगह न हो, की स्थापना करना ही विश्व सर्वहारा का फौरी कार्यभार है!

मई दिवस विश्व सर्वहारा के संघर्षों का संकल्प दिवस है. मजदूर वर्ग द्वारा आजादी, समानता एवं भाईचारे के लिए अपनी ताकत व कमजोरियों का आकलन कर, दृढ़संकल्प के साथ अनवरत संघर्ष करने के लिए अपनी पूरी शक्ति को लामबंद करने हेतु कमर कसने का दिन है. अपने–अपने देशों में मजदूर वर्गीय क्रांतियों की जीत के लिए, तद्वारा विश्व समाजवादी क्रांति की जीत के लिए शपथ लेने का दिन है. मई दिवस के संदर्भ में हमारी केंद्रीय कमेटी साम्राज्यवाद के विरुद्ध अविराम संघर्षरत विश्व मजदूर वर्ग को लाल सलाम् पेश करती है.

दुनिया, पर्यावरण एवं जनता का विनाश साम्राज्यवाद का स्वभाव है. नित्य विनाश में ही वह जीवित रह सकता है. विनाशकारी कोरोना को सृजित करने वाला साम्राज्यवाद अपने आर्थिक व वित्तीय संकट से बाहर आने के लिए भूमंडलीकरण नीतियों के तहत आर्थिक व्यवस्थाओं का पुनर्निर्माण करते हुए इस पूरे बोझ को जनता के कंधों पर लाद रहा है. एशिया, आफ्रीका, लातिन अमेरिका के पिछड़े देशों के दलाल नौकरशाही पूंजीपति एवं बड़े सामंती वर्गों के साथ सांठगांठ कर पूंजी व प्रौद्योगिकी की मदद के नाम पर जबरिया एवं असमान समझौतों के जरिए प्राकृतिक संसाधनों, सस्ती श्रमशक्ति और बाजारों को उच्श्रृंखल तरीके से लूट रहा है. फिर भी संकट से बाहर आने की स्थिति नजर नहीं आ रही है. मंदी, मुद्रास्फीति, बेरोजगारी और बढ़ गयी है. स्वास्थ्य, शिक्षा सहित समूचा जन जीवन संकटग्रस्त हो गया है जिससे जनता गंभीर मुश्किलों का सामना कर रही है. संपन्न और गरीब लोगों के बीच का अंतर बढ़ता जा रहा है. युद्ध आधारित अमेरिकी अर्थ व्यवस्था अपने सूपर मुनाफे के लिए दुनिया के कोने–कोने में असंख्य युद्धों को उकसाते हुए, हथियार बेच रही है. जीवनयापन दूभर बनने के कारण लोग जहां के वहां विद्रोह कर रहे हैं. इनका दमन करने साम्राज्यवाद फासीवादी ताकतों का पोषण कर रहा है. साम्राज्यवाद द्वारा अपनायी जा रही विध्वंसकारी नीतियों के चलते अंतर्राष्ट्रीय व देशीय तौर पर बुनियादी अंतरविरोध तीखे हो रहे हैं जिससे क्रांतिकारी परिस्थितियां विकसित हो रही हैं.

भारत में ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी मोदी सरकार की नव उदारवादी कॉरपोरेट प्रायोजित नीतियों के खिलाफ विभिन्न उत्पीड़ित वर्गों, तबकों की जनता, आदिवासी, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताएं जुझारू संघर्ष कर रही हैं. खासकर मोदी सरकार द्वारा श्रम कानूनों को रद्द कर, उनकी जगह बनाए गए चार श्रम संहिताओं, निजीकरण, अनियमित–ठेका प्रथा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), मजदूरों पर काम का बोझ बढ़ाने–काम के घंटों में बढ़ोत्तरी, वास्तविक वेतनों में गिरावट, बदतर कार्य परिस्थितियों एवं कल्याणकारी योजनाओं में कटौती के खिलाफ तथा न्यूनतम वेतन, आजीविका की गारंटी के लिए मजदूर एकताबद्ध होकर संघर्ष कर रहे हैं. 28–29 मार्च को ट्रेड युनियनों द्वारा आयोजित देशव्यापी हड़ताल किसान संगठनों के व्यापक समर्थन से अभूतपूर्व ढंग से सफल हुई जोकि बढ़ती मजदूर–किसान एकता का प्रतीक है.

साम्राज्यवाद संकट से बाहर आने अपने देशों के मजदूर वर्ग और मध्य वर्ग का शोषण कर रहा है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए स्थायी नौकरियों व कल्याणकारी योजनाओं में कटौती कर रहा है. जनता पर करों का अधिकाधिक बोझ लाद रहा है. कोरोना की वजह से उत्पन्न संकट के कारण कोविड प्रतिबंध, नौकरियों से छंटनी, काम के घंटे बढ़ाने, वेतनों में कटौती, महंगाई के कारण इन देशों के मजदूर वर्ग सहित कर्मचारी, छात्र, पर्यावरणवादी बड़े पैमाने पर हड़तालों व आंदोलनों में उतर रहे हैं. कई देशों में मजदूरों के प्रदर्शन जुझारू रूप ले रहे हैं.

नए अध्यक्ष बाइडेन के नेतृत्व में अपने खोते विश्व आधिपत्य को बचाए रखने के लिए अमेरिका काफी आक्रामक निर्णय लेकर अमल कर रहा है. साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्वी के तौर पर सामने आते रूस और चीन को नियंत्रित करने के तहत हालांकि नाटो गठबंधन और जी–7 देशों के प्रभुत्व को कायम रखने, 'क्वाड' को मजबूत

करने व औकस का गठन करने के बावजूद अमेरिका का पूरी तरह सहयोग करने की स्थिति में युरोप नहीं है. रूसी गैस और कच्चा तेल की आयात ही जर्मनी, फ्रांस और अन्य देशों के लिए आधार है. दूसरी ओर ताइवान के मामले में हस्तक्षेप करते हुए उसके समुद्री जलों में चीन और अमेरिका द्वारा जारी सैन्य अभ्यासों की होड़ खतरनाक बनती जा रही है. रूस और चीन के बीच सैन्य सहयोग समझौता बन गया है. शीत युद्ध के समाप्त होने के बाद साम्राज्यवादी देशों के बीच तनाव व झड़पें अभूतपूर्व ढंग से तीव्र स्तर पर पहुंच गए हैं. इसी क्रम में यूक्रेन पर रूस दुराक्रमण पर उतर आया. रूस को दी गयी हामियों को कूड़ेदान में फेंकते हुए अमेरिका द्वारा नाटो का निरंतर विस्तार करना, लालच व डरा–धमकाकर 30 देशों को उसमें शामिल करना, यूरोप में तीसरी बड़ी सैनिक शक्ति के रूप में मौजूद यूक्रेन को नाटो में शामिल करने का ऐलान करना, यूक्रेन के साथ मिलकर सैनिक अभ्यास करना, यूक्रेन की मदद में अपने सैन्य बलों के साथ–साथ नौसैनिक जहाजों एवं प्रक्षेपास्त्रों को तैनात करना एवं इन कार्रवाइयों के फलस्वरूप रूस द्वारा यूक्रेन की सरहदों में डेढ़ लाख सैन्य बलों की तैनाती के साथ साम्राज्यवादियों के बीच के छिड़े अंतरविरोधों ने यूक्रेन पर रूस के दुराक्रमणकारी युद्ध के लिए राह बनायी. विगत दो महीनों से यह युद्ध विनाशकारी ढंग से जारी है. इसलिए यह निसंदेह है कि यह युद्ध और विनाश का सबब बनेगा. जनता को असहनीय उत्पीड़न व संकट में धकेल देगा. साम्राज्यवादी देशों के आर्थिक व विश्व पर प्रभुत्व से संबंधित हितों के इस खेल का दुनिया भर का मजदूर वर्ग एवं अन्यान्य उत्पीड़ित वर्गों व राष्ट्रीयताओं की जनता शिकार हो रहा है. तीसरे विश्व युद्ध का खतरा बढ़ रहा है.

यूक्रेन पर रूस के दुराक्रमणकारी युद्ध के तौर पर छिड़ा यह युद्ध साम्राज्यवादी युद्ध ही है. इसमें अमेरिका के हाथ में यूक्रेन एक प्यादा है. दुनिया भर के मजदूर, किसान, मध्य वर्ग एवं अन्यान्य उत्पीड़ित वर्गों व राष्ट्रीयताओं की जनता का हमारी पार्टी आह्वान करती है कि वे इस युद्ध की भर्त्सना करें. साथ ही दुनिया के मजदूर वर्ग, उत्पीड़ित वर्गों व उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं की जनता का आह्वान करती है कि वह कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स की इन शिक्षाओं – '' 'श्रमिक जनता के लिए' कोई देश नहीं होता है .... कम्युनिस्ट सदा मौजूदा सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था के खिलाफ जारी हर क्रांतिकारी आंदोलन का समर्थन करते हैं'', 'सभी देशों के मजदूरों, एक हो'' तथा मार्क्सवाद के महान शिक्षक लेनिन की शिक्षा – ''चेतनपूर्ण मजदूर वर्ग साम्राज्यवादी भेडियों के झुंड में से किसी एक का भी समर्थन नहीं करता है'', को ऊंचा उठाए और इस युद्ध में किसी साम्राज्यवादी देश का पक्ष न लेवें. अमेरिका के नेतृत्व वाले नाटो गठबंधन को रद्द कराने, यूक्रेन को बलि का बकरा बनाते हुए अपने खोते विश्व आधिपत्य को बरकरार रखने अमेरिका द्वारा अपनायी जा रही विनाशकारी कार्रवाइयों को परास्त करने, रूस द्वारा विश्व जनता की आकांक्षाओं के सामने सिर झुकाते हुए निशर्त व फौरन यूक्रेन पर युद्ध को रोकने तथा अपने बलों को वापस बुलाने की मांग के साथ दुनिया भर में जनता जुझारू आंदोलन कर रही है. क्रांतिकारी परिस्थितियां विकसित हो रही हैं. इनका उपयोग करते हुए साम्राज्यवाद–विरोधी संघर्षों को तेज करने का कार्यभार विश्व सर्वहारा के कंधों पर है. यदि रूस परमाणु युद्ध पर उतरकर तीसरे विश्वयुद्ध के लिए तैयार होता है तो रूसी जनता को चाहिए कि वह उस महान अनुभव जिसमें कॉमरेड्स लेनिन और स्तालिन के नेतृत्व में, मजदूर वर्ग की अगुआई में समूचे उत्पीड़ित वर्ग एवं उत्पीड़ित राष्ट्रीयताएं एकताबद्ध होकर 1917 में तत्कालीन पहले विश्वयुद्ध को गृहयुद्ध में तब्दील कर अक्टूबर क्रांति को सफल किया गया, से सीखते हुए, उसकी विरासत को ऊंचा उठाते हुए पुतिन सरकार को उखाड़ फेंकना चाहिए. मजदूर वर्ग की अगुआई में नयी, उन्नत समाजवादी सरकार की स्थापना करनी चाहिए. इस युद्ध में अमेरिका और यूरोप के देशों द्वारा यूक्रेन को उकसाना बंद किया जाए, इस मांग के साथ उन देशों के मजदूर वर्ग के नेतृत्व में वहां की उत्पीड़ित जनता को जुझारू आंदोलनों का संचालन करना चाहिए. अमेरिका–नाटो गठबंधन यदि तीसरे विश्वयुद्ध पर उतर आते हैं तो उसे गृहयुद्ध में तब्दील करना चाहिए.

विश्व मजदूर वर्ग और उत्पीड़ित जनता से हमारी पार्टी अपील करती है कि युद्ध के कारण शरणार्थी बनकर अन्य इलाकों में जाने वाले यूक्रेनी लोगों को मानवीय दृष्टिकोण से बचाएं. यूक्रेनी मजदूर वर्ग और उत्पीड़ित जनता को चाहिए कि वे अपने देश को नाटो विशेषकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों के लिए उपग्रह बनाने वाले देश के अध्यक्ष जेलेंस्की और उनकी सरकार की नाटो अनुकूल विशेषकर अमेरिका–ईयू अनुकूल नीतियों का विरोध करें. अपने देश की संप्रभुता को बचाने, अपनी राष्ट्रीयता के अस्तित्व को बचाने के लिए साम्राज्यवादियों द्वारा थोपे गए युद्ध को गृहयुद्ध में बदलते हुए राज्यसत्ता को हथियाए. यूक्रेनी मजदूर वर्ग के नेतृत्व में उस देश के तमाम उत्पीड़ित जनता को चाहिए कि वह सभी प्रकार के साम्राज्यवादियों के खिलाफ लड़कर यूक्रेन की संप्रभुता को हासिल करें. यूक्रेन के डॉनबास इलाके के डोनेट्स्क, लूहांस्क गणतंत्रों के भविष्य को वहां की उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं की जनता रूस पर निर्भर होकर नहीं बल्कि अपनी स्वयं शक्ति पर आधारित होकर हासिल करे. साम्राज्यवादी देशों के साथ पिछड़े देशों की दलाल सरकारों द्वारा किए गए सैनिक समझौतों

सहित सभी प्रकार के सामझौतों के रद्द के लिए उन देशों की जनता को संघर्ष करना चाहिए. साम्राज्यवाद के शोषण व उत्पीड़न से मुक्ति हासिल करने, विश्व शांति कायम करने के लिए इस धरातल से साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंककर समाजवाद जिसमें युद्धों के लिए कोई जगह नहीं होती है, की स्थापना करना ही विश्व सर्वहारा, मार्क्सवादी–लेनिनवादी–माओवादी ताकतों के सामने मौजूद एकमात्र रास्ता है, तात्कालिक कार्यभार है.

- **मई दिवस जिंदाबाद!**
- **साम्राज्यवाद को हराकर विश्व शांति को कायम करेंगे!**
- **दुनिया के मजदूर वर्ग की एकता जिंदाबाद!**
- **सभी देशों के मजदूरों, एक हो!**
- **मजदूर–किसान एकता जिंदाबाद!**
- **नवजनवादी क्रांति जिंदाबाद!**
- **यूक्रेन पर रूसी दुराक्रमणकारी युद्ध का कारण बनने वाले साम्राज्यवाद को हराकर मजदूर वर्गीय राज्य की स्थापना करेंगे!**

अभय

(अभय)
प्रवक्ता,
केन्द्रीय कमेटी,
भाकपा (माओवादी)